SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) : 2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 2, Issue-4, October to December: 2024
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

यज्ञों में प्रयुक्त बलिदान शब्दो का सत्यार्थ

डॉ. भरतभाई भीखाजी राजगोर

प्राक्कथन :

"अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः ।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः ।।" [१]

अर्थात्– संपूर्ण प्राणी-जगत अन्न से उत्पन्न होता हैं, अन्न की उत्पत्ति बारिश से होती हैं ओर बारिश यज्ञ से होता हैं। इसलिए निश्चित कर्म की प्राप्ति के लिए यज्ञ अवश्य करना चाहिए। सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदैव यज्ञ में ही प्रतिष्ठित रहते हैं।

यज्ञ के उपयोग में आनेवाले सभी तत्वों में मंत्र की शक्ति सर्वोपरि हैं। आध्यात्मिक ओर सांस्कृतिक दृष्टि से मंत्र का बहुत ही महत्त्व रहा हैं। मंत्र से ही यज्ञ का आरम्भ होता हैं ओर मंत्र से ही पूर्णाहुति। वेद विद्या की दृष्टि से यज्ञ-विद्या सर्वश्रेष्ठ हैं। सामान्यतः देवशक्तियों की प्राप्ति के उद्देश्य से त्याग ओर समर्पित का भाव व्यक्त होता हैं। मनुष्य, प्राणी, वातावरण ओर सम्पूर्ण सृष्टि को यज्ञ से बहुत ही लाभ प्राप्त होता हैं।

वेदों में यज्ञ की प्रशंसा अनेक स्थानों पर देखने को मिलती हैं एवं इसका अर्थ भी द्रश्यमान हैं।

यज्ञ का अर्थ :

" यज् " धातु से यज्ञ शब्द बना है, जिसका अर्थ - देवपूजा, संगतिकरण और दान होता हैं। पूर्ण शब्द " यज् " धातु में " नङ् " प्रत्यय लगाने से " यज्ञ " शब्द बनता हैं।

१. **यज्ञो वै परशुः ।**[२]
२. **यज्ञो वै आपः ।**[३]
३. **यज्ञो वै अन्नम् ।**[४]
४. **यज्ञो वै पवित्रम् ।**[५]

इस वाकयोमें यज्ञ को परशुः, आपः, अन्नम्, पवित्रम् के समान शक्तियों का प्रतिक दर्शाया गया हैं। ईश्वरीय दिव्य-शक्तियों की आराधाना, उपासना ओर उनकी समीपता को "संगति" कहते हैं ओर जिस वस्तु को हम अपनी प्रिय वस्तु मानते हैं, उस वस्तु को ईश्वर को अर्पण करना "यज्ञ" कहते हैं। यह यज्ञ की एक आध्यात्मिक प्रक्रिया हैं। व्यवहारिक अर्थ में एसा कह सकते हैं की बड़ों को सम्मान देना, मित्रता एवं खुद से छोटो की मदद करना, दान करना, सहाय्यता करना भी "यज्ञ" ही हैं। हवन के अर्थ में यज्ञ शब्द बहुत ही प्रसिद्ध हैं। जो आयोजन विश्वकल्याण के लिए किया लाए वह "यज्ञ" हैं। जिस अनुष्ठान के माध्यम से आध्यात्मिक, आधिदैविक ओर आधिभौतिक यह तीन प्रकार के कष्टो का निवारण हो वही "यज्ञ" हैं। देवो का सम्मान, पूजन ओर देवो को तृप्त करना ही "यज्ञ" हैं। देश, काल ओर पात्र का विचार करके अच्छे उद्देश्य के लिए दिया गया धन भी "यज्ञ" हैं। ईश्वर को आत्मसमर्पण करने की भावना मात्र भी "यज्ञ" ही हैं।

" यज्ञाः कल्याणहेतवः ।" [६] (वि. पु. ६/१/१८)

यज्ञ ही कल्याण का हेतु हैं। यज्ञ से जो आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होता हैं वह अलौकिक हैं, उसे ही स्वर्ग-सुख कहा गया हैं। यज्ञ से सर्व कामनाओ की पूर्ति तो होती ही है किन्तु यज्ञ का मुख्य लाभ तो आत्मकल्याण ही हैं।

"यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ।।" [७]

(श्री मद्भगवद् गीता – १८. ५)

यज्ञ, दान, तप ओर कर्मों का त्याग नहीं करना चाइए, यह सब कुछ करना उचित हैं। यज्ञ, दान ओर तप मनीषियो को भी पवित्र करते हैं।

वैदिक कालसे "यज्ञ" का अधिक महत्त्व रहा है। वेदों में ऋग्वेद प्राचीनतमः वेद है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के प्रथम मंत्र में ही यज्ञ ओर अग्नि का वर्णन देखने को मिलता है –

ॐ अग्निमिळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारम् रत्नधातमम् ॥ [८] ऋ. - १.१.१॥

अर्थः - मैं अग्नि की स्तुति करता हूं जो यज्ञ (यज्ञ) का पुरोहित (पुजारी), (यज्ञ का नेतृत्व करने वाला पुजारी), (साथ ही) इसके ऋत्विज (उचित समय पर बलिदान करने वाला पुजारी) है; यज्ञ जो देवताओं की ओर शित जो होता (देवताओं का आह्वान करने वाला पुजारी) और रत्न (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तर का धन) का दाता है।

इसीसे ज्ञात होता हें की यज्ञ का बहुत ही महत्त्व हें और यज्ञ कितनी प्राचीन विद्या हैं। इस विद्या में, इस कार्य में प्रयुक्त अनेक विधानों का समावेश होता है, जैसे की पञ्चभूसंस्कार, नवग्रहशांति, वैश्वदेव संकल्प, आयुष्यमन्त्रजप, बलिदान और श्रेयोदान इत्यादि।

यज्ञः एवं पशुबलि :

यज्ञ में प्रयुक्त इस विधानों मे से एक विधान है – बलिदान। सही मायने में इस बलिदान शब्द के अनेक अर्थ होते है। यज्ञों के भी अनेक प्रकार हैं, उसमे "पशुयज्ञ" भी है। एक शब्द के अनेक अर्थ होते है। पशु शब्द के भी अनेक अर्थ होते हैं, किन्तु कुछ संकुचित विचार वाले लोकोने वेदभावना और यज्ञ की मुख्यभावना को छोड़कर उलटा इसका अर्थ " पशु-हिंसा" कर दिया, और अर्थ का अनर्थ हो गया। मध्यकालीन युग के लोकोने पशुयज्ञ का वास्तविक रूप एवं अर्थ भूलकर अज्ञानता के कारण पशु हत्या करने लगे उसमें घोड़े , गाय , बकरियाँ, सांप, मनुष्य इत्यादि का वध करके होमकार्य करने लगे।

जब यह हत्याकांड ज्यादा बढ़ने लगा तब लोगों में यज्ञ प्रति धृणा उत्पन्न हुई ओर लोग यज्ञ का विरोध करने लगे, धीरे-धीरे सब बंध हुआ। सांप्रत समय में जीवों की हत्या करके यज्ञ कार्य नहीं होते किन्तु दुर्गा इत्यादि देवी पूजा में आज भी कुछ अंधश्रद्धा के लोग प्राणीओ की हत्या करते है। इस अज्ञानता ओर कु-रिवाज का ज्यादा से ज्यादा विरोध होना चाहिए तभी समाज तथा धर्म में लाभ प्राप्त होगा।

उपनिषद् परंपरा में वैदिक-पशुयाग का वास्तविक तात्पर्य – " "कामक्रोधलोभादयः पशवः।" हैं। इस काम, क्रोध , लोभ ओर मोह का हनन करके ही यज्ञकार्य करना चाहिए।

विचारयोग्य यह हे की यज्ञ में हिंसा ना हों इसका बहुत ज्यादा ध्यान रखा जाता हें, जिसमें 'पञ्चभूसंस्कार' विधि के द्वारा सूक्ष्मजीव-जन्तु की रक्षा के लिए पहेले से तथा संपूर्ण सावधानी पूर्वक तैयारी की जाती हैं , तो एसे कार्य में पशु जैसे बृहत जीवों का निर्दयीता पूर्वक वध कैसे कर शकते हैं ?

ब्राह्मणग्रंथों में जो पशुयज्ञ का वर्णन किया गया हें, वह केवल अलंकाररूप ही हें। लोगों ने अर्थ का अनर्थ कर दिया। प्रारंभ में देवो ने पुरुष का बलिदान दिया, उसी समय उसका पवित्र भाग वहा से निकलकर अश्व में, अश्व से धेनु में, धेनु से अजा में ओर अजा से उस पवित्र भाग ने पृथ्वी में प्रवेश कर लिया, जब देवोने पृथ्वी का खनन किया तब पृथ्वी में से अक्षत, तिल ओर यव प्राप्त हुए। अक्षत, तिल और यव इत्यादि से जब हवन किया तो उस हवन का स्वीकार भी हुआ ओर बल एवं शक्ति भी प्राप्त हुई।[1] इस कथानक से ज्ञात होता हें की पशु इत्यादि में वह पवित्र भाग नहीं हें। यवाक्षतादि पदार्थों में ही हवन करने के योग्य ओर पवित्र तत्त्व हें। पृथ्वी से उत्पन्न वनस्पति, अन्न इत्यादि को ही पवित्र हवनीय पदार्थ माना गया हें। एसि मान्यता 'ऐतरेयब्राह्मण' ग्रन्थ में भी बताया गया हें -

"पशुभ्यो वै मेधा उदक्रामंस्तौ व्रीहिश्चैव यवश्च भूतावजायेताम्।" [९]

--- ऐतरेयब्राह्मणः २/ २/ ११

"मेध" शब्द का अर्थ " मेधा " अथवा " मेधावी " होता हें, मेधा को अंग्रेजी भाषामें " कल्चर " कहते हें। किसी भी वस्तु का अच्छी तरह से निर्माण , व्यवस्था एवं उन्नति को ही वास्तविक रूप से " मेध " कहा गया हें। 'गोमेधः', 'अश्वमेधः', 'नरमेधः' इत्यादि शब्दों का अर्थ, गो-अश्व-मनुष्य का **वध करके हवन करना नहीं होता** किन्तु –

' गो = **पृथ्वी**, मेधः = **उन्नतकरण** (उन्नतिकरण)' अर्थात् पृथ्वी को कृषि के लिए उन्नतिकरण करने को ही ' गोमेधः ' कहते है।

' अश्वः = **राष्ट्र** , मेधः = **उन्नतकरण** (उन्नतिकरण)' [१०] (यजुर्वेद १०.१) अर्थात् राष्ट्र की उन्नति, समृद्धि ओर सुरक्षा का प्रयत्न तथा एक विश्व की स्थापना को 'राष्ट्रमेधः' कहते है।

' नरः = **मनुष्यः**, मेधः = **उन्नतकरण** (उन्नतिकरण)' सुसंस्कृत कर्तव्य ओर दोष-दुर्गण से विमुक्ति को ही **'नरमेधः'** कहते है। मनुस्मृति में **'नरयज्ञ'** शब्द का अर्थ **"अतिथिपूजन"** कहा गया है - "नृ यज्ञो अतिथिपूजनम्"। चरकसंहिता में **'अज' ओषधी** का वर्णन दर्शाया गया है – "अजानामौषधिरजश्रुगीतिर्विज्ञायते।" [११]

- चरकचिकित्सा प्रकरणम्-१

इस प्रकार अजा = **औषधि** के स्थान में अजापशु को प्रतिपादित करना योग्य नहीं हैं। महाभारत के शान्तिपर्व में भी अजा शब्द का अर्थ औषधि तथा बीज कहाँ गया हैं। जिस यज्ञ में पशु का वध हो वह सज्जनों का धर्म नहीं कहा जाता। प्राचीन आर्यग्रन्थो में पशु-हिंसा करके यज्ञ कार्य करने का कोई उल्लेख नहीं हैं। पशु शब्द के समानार्थी अर्थ को अयोग्यत समज के अंधकारयुग के अज्ञानी लोको ने हवन में पशु- हिंसा का अनर्थ भी किया हैं। इसमें कुछ स्वार्थी ब्राह्मणों ने भी सहायता की होगी उसमें कोई आश्चर्य नहीं हैं।

इतिहास में बड़े ओर एनेक यज्ञ, महायज्ञ का वर्णन प्राप्त होता हें, पशु इत्यादि नहीं **किन्तु एक चींटी का भी वध नहीं दर्शाया गया, तो पशु-हिंसा की बात बहुत दूर की बात हैं**। यज्ञ का उद्देश्य बहुत बड़ा हैं। यज्ञ नारायण भगवान हंमेशा पवित्र ही हैं।

निष्कर्ष) Conclusion (:

इस प्रकार ऋग्वेद के प्रथम सूक्त अग्नि-सूक्त के प्रारम्भ से ही यज्ञ का अधिकाधिक महत्त्व बताया गया हैं। यज्ञ के बारे में संशोधन करने पर ज्ञात हुआ की यज्ञ एक प्रकार की विद्या ही हैं, जिससे प्रकृति के तत्वों के साथ-साथ मानव जीवन की भी रक्षा की जा सकती हैं। यज्ञ में प्रयुक्त बलिदान शब्द का सही अर्थ नहीं समज के कुछ अज्ञान लोगो ने भ्रमणा फैला के, यज्ञ जेसे पवित्र ओर उत्तम कार्य को कलंकित करने की चेष्टा की । दोष निवारण एवं पवित्रा के लिए "पञ्चभूसंस्कार विधि" जेसे कर्म को दर्शाया गया हो, वहाँ पशु इत्यादि की हत्या कैसे शंभव हो ?

यहा बलिदान के संदर्भ में कुछ शब्दों का सही अर्थघटन बताने का प्रयास मात्र किया गया हैं। वे शब्द गोमेध', 'अश्वमेध', 'नरमेध 'इत्यादि हैं। "यज्ञ" से केवल ब्राह्मणों की पुष्टि नहीं होती किन्तु, ब्राह्मण, माली, कुम्हार, विक्रेता, बढ़ई, लकड़ी इत्यादि के व्यवसाय करने वाले सभी का गुजरान चलता था। "यज्ञ" करने से भारत की पारिवारिक परम्परा भी जीवंत थी, जो आज के समय में कम होती दिखाई दे रही हैं। राजाओ के द्वारा कई परहित में निश्वार्थभावना से, विश्वकल्याण के लिए यज्ञ- महायज्ञ किए गए हैं, जिसका उल्लेख अनेक स्थान पर मिलता हैं।

मेरा मन्तव्य हैं की प्रत्येक मनुष्य को कमसे कम प्रति वर्ष "यज्ञ" करना चाहिए, जिससे प्रकृति के साथ परिवार का भी स्नेह बना रहें।

संदर्भग्रन्थ सूची :

१. श्री मद्भगवद् गीता – अध्याय – ३.१४

श्रीमद्भगवद्गीता
लेखकः – श्री राज भास्कर
प्रकाशकः – श्री गजानन पुस्तकालय, टावर रोड, सुरत
आवृत्तिः – फ़ेब्रुआरी – २०२०
मुद्रकः – नटराज ओफ़्सेट, अमदावाद

२. शतपथब्राह्मणग्रन्थः ३/ ६/ ४/ १०

शतपथब्राह्मणम्
लेखकः – पं. श्रीचन्द्रधरशर्मा
प्रकाशकः – अच्युतग्रन्थमालाकार्यालयः, काशी
प्रकाशनवर्षम् – १९९४

३. शतपथब्राह्मणग्रन्थः १/ १/ १/ १

शतपथब्राह्मणः षट्काण्डात्मकः (प्रथमो भागः)
काशी-हिन्दुविश्वविद्यालयधर्मविज्ञानविभागाध्यक्षाणां श्री जो. भ. गोयनकासंस्कृत-
महाविद्यालयवेदप्रधानाध्यपकानां वेदाचार्यवर्याणां गौडोपाह्य पं. श्री विद्याधरशर्मणां तत्त्वावधाने
तदन्तेवासिना वेदाचार्येण पं. श्रीचन्द्रधरशर्मणा संपादितम्
प्रकाशकस्थानम् – अच्युतग्रन्थमाला, कार्यालयः – काशी
प्रथमावृत्तिः – १०००, संवत् – १९९४
प्रकाशकः – श्रेष्ठिप्रवरः श्रीगौरीशंकरगोयनका : श्रीअच्युत-काशी

मुद्रकः – श्रीनारायण राजाराम सोमणः श्रीलक्ष्मी नारायण प्रेस, काशी

४. शतपथब्राह्मणग्रन्थः १/ १/ २/ २

लेखकः – पं. श्रीचन्द्रधरशर्मा

प्रकाशकः – अच्युतग्रन्थमालाकार्यालयः, काशी

प्रकाशनवर्षम् – १९९४

५. शतपथब्राह्मणग्रन्थः १/ ४/ ३/ ५२

प्रकाशकः – विजयकुमार गोविन्ददास

प्रथमो भागः, ई.स. २००३

सम्पादकः – सत्यप्रकाश सरस्वती स्वामी

६. **वि. पु. ६/१/१८**

विष्णुपुराणम्

सम्पादकः – पं. धानेशचन्द्र उप्रेति

प्रकाशकः – परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली

प्रथमसंस्करणम् - १६८६

७. **श्री मद्भगवत गीता – १८. ५**

संस्कर्ता – वासुदेवशर्मा

प्रकाशकः – निर्णयसागर मुद्रणालय, १९२५

८. **ऋ. - १.१.१**

सम्पादकः – आचार्यः गोपालप्रसादः

प्रकाशकः – गङ्गा बुक डिपो, मथुरा

प्रथमसंस्करणम् – १८६८

९. **ऐतरेयब्राह्मणः २/ २/ ११**

ऐतरेयब्राह्मणम् (प्रथमो भागः एवं द्वितीयः भागः)

कर्ता – श्रीचिन्नस्वामिशास्त्री एवं पं. पट्टाभिरामशास्त्री

प्रकाशकः – चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी

संस्करणम् – तृतीयं संस्करणम्, २०५९

१०. यजुर्वेद १०.१

यजुर्वेदः (भाष्यसहितः)

निर्माता – परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमद्-दयानन्दसरस्वतीस्वामिना निर्मितम्

मुद्रणम् – अजमेरनगरे वैदिकयन्त्रालये

प्रकाशनवर्षम् – १९६१

११. **चरकचिकित्सा प्रकरणम्-१**

चरक चिकित्सा/ चरक संहिता

लेखकः – चन्द्रगुप्तः वार्ष्णेयः

प्रकाशनम् – पत्रिका प्रकाशन, जयपुर

पञ्चमं संस्करणम्, अप्रैल २०१०

ONLINE SEARCH BOOKS AND MATERIALS

1) www.amarujala.com

2) www.bharatdiscovery.org
3) www.cpcb.nic.in
4) www.dda.org.in
5) www.emis.wbpcb.gov.in
6) www.hindi.indiawaterpotal.org
7) www.hindi.news18.com
8) www.india-wris.nrsc.gov.in
9) www.jagran.com
10) www.khabar.ndtv.com
11) www.mapsofindia.com